दलितों व शोषितों का पाक्षिक पत्र
विज्ञापन के लिए केन्द्रीय सरकार व राज्यों द्वारा स्वीकृत

हमायती

सम्पादक–डॉ0 सोहनपाल सुमनाक्षर

❑ *वर्ष 57* ❑ *अंक-9* ❑ *दिल्ली* ❑ *फरवरी, 2019 (द्वितीय)* ❑ *मूल्य : 2 रु.*

श्री गुरु रविदास जयन्ती पर विशेष लेख

गुरु रविदास जी का बेगमपुरा लोकतांत्रिक राष्ट्र

-डा. सोहनपाल सुमनाक्षर

संत शिरोमणि गुरु रविवास जी का जन्म आज से साढ़े छह सौ वर्ष पूर्व पंडित, पांडे, ब्राह्मणों के गढ़ काशी (वाराणसी) में एक चर्मकार के घर माघ पूर्णिमा को रविवार के दिन हुआ था। इस विषय में यह दोहा प्रसिद्ध है–

चौदह सौ तैंतीस की
माघ सुदी पंदरास।
दुनियों के कल्याण हित,
प्रगटे श्री रविदास।।

यह वह समय था जब समाज में छुआछूत, जात–पांत, भेदभाव, ऊंच–नीच, अंधविश्वास चरम सीमा पर था। शूद्र जाति के लोगों को तो जानवरों से भी नीचे मानकर ब्राह्मणवादी लोग उनके साथ दुराचार, अत्याचार, बलात्कार और बर्बरता बरतते हुए उन्हें समता के सभी मानवीय अधिकारों से वंचित किया हुआ था।

भगवत भजन का एकाधिकार ब्राह्मणों का था, और ब्राह्मण को मनु व्यवस्था के अनुसार वर्ण व्यवस्था में सर्वोच्च मानकर सत्ता के शिखर पर बैठे राजा–महाराजा धर्मान्धता के कारण उन्हें पूरा सम्मान देते हुए उनके हर गलत कार्य को भी सही मानते हुए उन्हें पूरा सम्मान देते थे। समाज में अछूतों की तरह महिलाओं को भी बराबर सम्मान प्राप्त नहीं था। उन्हें भी पैरो की जूती मानते हुए उनके साथ खुला दुर्व्यवहार किया जाता था। पति की मृत्यु के साथ उसे भी सती होने के लिए बाध्य किया जाता था।

ऐसे मध्यकालीन भारत में संत शिरोमणि गुरु रविदास ने जन्म लेकर सामाजिक असंतुलन को संतुलित किया, अशांत हृदयों को अपनी वाणी से शांत किया, निराश मनों को आशा की नई किरण दिखाई, अंध विश्वास एवं भ्रमों का प्रमाणित तर्कों से पर्दाफांस किया। धर्म के नाम पर हो रहे अत्याचारों को खत्म करके पूजा का नया सिद्धांत प्रस्तुत किया, ऊंच–नीच की दीवारों को गिराकर सभी को एकता का पाठ पढ़ाया और भाईचारे की भावना को प्रोत्साहित किया।

गुरु रविदास जी ने ब्राह्मणों के गढ़ काशी में वर्ण व्यवस्था का विरोध डंके की चोट करते हुए खुले शब्दों में कहा–

जात–पांत पूछे न कोई,
हरि को भेजे सो हरि का होई।

उन्होंने मन की शुद्धता पर जोर देते हुए कहा–

जिसका मन चंगा,
उसकी खटोटी में गंगा।

गुरु जी ने जात–पांत पर चोट करते हुए कहा–

जात–जात में जात है
ज्यों केलन में पात।
'रविदास' न मानुष जुड़ सकै,
जौ लौं जात न जात।।

उन्होंने मनुष्य के गुणों को महत्ता देते हुए कहा–

रविदास ब्राह्मण ना पूजिये,
जऊ होवे गुनहीन।
पूजिहि चरन चंडाल के,
जऊ होवै गुन परवीन।।

गुरु रविदास जी ने देवी–देवता, मूर्तिपूजा, पूजा–पाठ, धार्मिक आडम्बर का पर्दाफांस करते हुए कहा कि मन ही मंदिर है जहां से सच्ची सुख शांति प्राप्त हो सकती है–

मन ही पूजा, मन ही धूप।
मन ही सेवू सहज सरूप।।

गुरु रविदास जी ने परमात्मा प्राप्ति के लिए बाहरी कर्मकांडों व पूजा पाठों का खंडन करते हुए कहा कि सच्चे मन से प्रभु को समर्पित कर सच्ची पूजा कर सकते हैं–

जब हम होते तब तू नाही,
अब तूही मैं नाही।
जऊ हम बांधे मोह पास,
हम प्रेम बधनि तुम बांधे।।
अपने छुटन को जतनु करहु,
हम छुटे तुम आराधे।।

गुरु रविदास जी ने कट्टरपंथी पंडित–पांडे और मुल्ला मौलवियों पर भी सीधा प्रहार करते हुए कहा–

मंदिर से कोई धिन नहीं,
मस्जिद सो ना प्यार।
दोनों में राम–रहिम नहीं,
कह रविदास चमार।।

गुरु जी ने धर्मांतरण पर सीधी चोट करते हुए कहा–

हरि सा हीरा छांडिके,
करे अन की आस।
ते नर दोजख जायेंगे,
सत भाखै रविदास।।

गुरु जी का कहना था कि बड़े पुण्य कर्मों के बाद यह दुर्लभ मनुष्य जीवन मिला है। इसे व्यर्थ में विकारों में फंसाकर व्यर्थ गंवाने की जगह प्रभु स्मरण में लगाना चाहिए–

(शेष पृष्ठ 3 पर)

सम्पादकीय

2019 लोकसभा चुनाव – सत्ता का ऊंट किस करवट बैठेगा?

सन् 2014 के लोकसभा चुनाव में नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा की जीत हुई थी और नरेन्द्र मोदी कांग्रेस के 10 साल के शासन के बाद भारत के प्रधानमंत्री बने थे। 2014 का चुनाव जीतने के लिए नरेन्द्र मोदी ने बहुत से वायदे किये थे उनमें से पहला था कि प्रधानमंत्री बनने पर विदेशों से काला धन वापिस लाऊंगा, दूसरा था कि देश के प्रत्येक नागरिक के बैंक खाते में 15 लाख रुपये जमा कराऊंगा, तीसरा था प्रत्येक साल 2 करोड़ बेरोजगार लोगों को नौकरी दिलाऊंगा, चौथा था भ्रष्टाचारियों को जेल पहुंचाऊंगा। अब भाजपा की मोदी सरकार के पांच साल का कार्यकाल खत्म होने को है और अगले 2-3 महीने के बाद देश के लोकसभा चुनाव–2019 होने जा रहे हैं। इस चुनाव में देश की जनता के सामने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 2014 के लोकसभा चुनाव में किये वायदे हैं। क्या उन्होंने उन्हें अपने कार्यकाल में पूरा किया। इसके अलावा अपने प्रधानमंत्री काल में उन्होंने जो नये, क्रान्तिकारी कार्य किये, उनसे देश की जनता को कितना लाभ पहुंचा, जिससे अब उन्हें दुबारा प्रधानमंत्री बनने के लिए वोट दिया जाये या नहीं?

देश को 2004 से 2014 तक का 10 साल का कार्यकाल कांग्रेस का शासन रहा। डा. मनमोहन सिंह इन 10 सालों में देश के प्रधानमंत्री रहे। वह निहायत ईमानदार, कर्त्तव्यनिष्ठ, शान्त व सौम्य स्वभाव के महान अर्थशास्त्री हैं और उसी रूप में वह इन 10 सालों में प्रधानमंत्री के रूप में कार्यरत रहे, पर उनका रिमोट कन्ट्रोल कांग्रेस–अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी के हाथ में होने का इल्जाम भाजपा लगाकर उन्हें बदनाम करती रही और उसने 2014 के आम चुनाव से पहले देश में ऐसा वातावरण बनाया कि देश में कांग्रेस भ्रष्ट पार्टी है और उसकी सरकार में सभी मंत्री भी भ्रष्ट हैं जो आकंठ भ्रष्टाचार में डूबे हैं। उन्होंने 2–जी घोटालों, बाड्रा जमीन घोटालों का इस तरह डटकर कुप्रचार किया कि उस समय देश की जनता के मन व मस्तिष्क में यह बैठ गया कि भाजपा व नरेन्द्र मोदी जो कह रहे हैं, वह पूरी तरह सच है। इसलिए उसने उसे चुनाव में कांग्रेस पार्टी को पूरी तरह भ्रष्ट मानते हुए नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा को एक तरफा वोट दिया और लोकसभा में भारी बहुमत से भाजपा को जिता कर नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा की बहुमत वाली सरकार बनवा दी। भाजपा को चुनाव में 300 से ऊपर सीटें मिलीं, वहीं देश में गत 10 सालों में लगातार शासन करने वाली कांग्रेस पार्टी पराजित होकर 44 लोकसभा सीटों तक सिमट कर रह गई। इस प्रचंड जीत ने भाजपा की बांछें खिला दी और नरेन्द्र मोदी को बना दिया अधिनायकवादी प्रधानमंत्री। जहां नरेन्द्र मोदी (नमो) ही भाजपा थी और भाजपा के लिए देश की पतवार का खेवनहार एकमात्र प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी। अब तक 'गरीब घराने का चाय वाला' का नारा लगाकर लोगों की भावनाओं से खेलने वाला चुनाव में जीतकर प्रधानमंत्री बनने पर 'चाय वाला का सादगी वाला आदमी अब 5 करोड़ का सोने के तारों व हीरों जड़ित कोट पहनकर अपने पुरातन को भूल गया। जब आलोचना होने लगी तो तुरन्त उस कोट को नीलामी के लिए दे दिया और उससे प्राप्त 5 करोड़ की धनराशि गरीबों के कल्याण में देने का नाटक करके अपनी भूल सुधारने की कोशिश की; पर मोदी के नाम से सोने के तारों से महिमामंडित के उस कोट का दर्शन भारत की गरीब जनता के

(शेष पृष्ठ 3 पर)

भारतीय दलित साहित्य अकादमी प्रकाशन

विश्व धरातल पर दलित साहित्य	डॉ. सुमनाक्षर	50/-
अंधा समाज और बहरे लोग	डॉ. सुमनाक्षर	60/-
सिन्धु घाटी बोल उठी	डॉ. सुमनाक्षर	50/-
अब नहीं रहेंगे हाशिये पर	डॉ. सुमनाक्षर	80/-
अम्बेडकर शतक	डॉ. सुमनाक्षर	50/-
विश्व विभूति डा. अम्बेडकर	डॉ. सुमनाक्षर	50/-
दलित लेखक परिचय ग्रंथ (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	250/-
बुद्धा टू अम्बेडकर (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	150/-
दलित साहित्य	डॉ. सुमनाक्षर	100/-
अम्बेडकर दर्शन	डॉ. सुमनाक्षर	40/-
हमारे संत और समाज सुधारक	डॉ. सुमनाक्षर	60/-
धर्म और समाज	डॉ. सुमनाक्षर	40/-
आदिम जाति चमार (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	300/-
दलित उद्घोष	डा. सुमनाक्षर	80/-
दलित साहित्य की हुंकार-सात समन्दर पार	डॉ. सुमनाक्षर	100/-
युगपुरुष बाबू जगजीवनराम	डॉ. सुमनाक्षर	200/-
प्राचीन आदिम जाति वाल्मीकि (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	100/-
सभ्यता, संस्कृति, समाज और साहित्य	आचार्य गुरुप्रसाद	100/-
डा. अम्बेडकर भजनावली	राजमल 'राज'	25/-
हमारे दलित गौरव	राजमल 'राज'	25/-
भारत रत्न डा. बी.आर. अम्बेडकर	राजमल 'राज'	25/-
मूल भारती से दलित	राजमल 'राज'	50/-
अम्बेडकरवाद बनाम सामाजिक परिवर्तन	राजमल 'राज'	80/-
दलित साहित्य–दशा और दिशा	डा. माता प्रसाद	200/-
दलित साहित्य से सामाजिक परिवर्तन	डा. माता प्रसाद	100/-
भारत की गुलामी के 22 सौ साल	प्रदीप कुमार मौर्य	250/-
सृजन के कण	जीपी पचौरिया 'दीप'	150/-
बौद्ध धर्म–गया से अयोध्या तक	प्रदीप कुमार मौर्य	120/-
गांधी, अम्बेडकर और दलित	प्रदीप कुमार मौर्य	100/-
सत्सम दर्शन	राजमल 'राज'	100/-
जागा मेहनतकश इंसान	राजमल 'राज'	50/-
हम एक हैं	डा. माता प्रसाद	60/-
रैदास से संत शिरोमणि गुरु रविदास	डा. माता प्रसाद	50/-
ताकि सनद रहे	डा. सुमनाक्षर	100/-

पुस्तक मंगाने के लिए मनीआर्डर से राशि अग्रिम भेजें, व्यवस्थापक,

दलित साहित्य सेन्टर

(भारतीय दलित साहित्य अकादमी)

बी-3/9, दूसरी मंजिल, माडल टाउन-1, दिल्ली-9

फोन : 27421449, 27421460, मो. 9810278936

सन्तों के ध्रुवतारे गुरु रविदास

डा. सुमनाक्षर

संत शिरोमणि गुरु रविदास जी ने आज से साढ़े छह सौ साल पहले यह दोहा अपने अनुयायियों के लिए कहा था–

हरि सा हरा छाड़िके
कर अन की आस।
ते नर दोजख जायेंगे
सत भाखै रविदास।।

यह दोहा भले ही उन्होंने मुस्लिम हुकूमत के दौरान अपने भक्तों और अनुयायियों को हिन्दू धर्म छोड़कर मुस्लिम धर्म अपनाने से रोकने के लिए लिखा हो, पर इस दोहे की सार्थकता प्रत्येक काल में रही है भले ही उस समय किसी भी बादशाह या राजा–महाराजा की हुकूमत रही हो और वो लोभ–लालच या दबाव में अपना धर्म परिवर्तन करना चाह रहे हों।

श्री गुरु रविदास जी आध्यात्मिक शिखर पर पहुंचे महान संत थे और वह आत्मिक शुद्धि को सर्वोपरि मानते थे। तभी तो उन्होंने कहा था–''जिसका मन चंगा, उसकी खटोटी में गंगा।'' यानि जिसका मन पावन व शुद्ध है, उसे किसी गंगा–स्नान की जरूरत नहीं है। मन की इसी शुद्धि के विषय में सद्गुरु कबीर ने भी कहा है–

कबीरा मन पावन भयो
जैसे गंगा नीर।
पाछे पाछे हरि फिरैं
कहत कबीर कबीर।।

संत गुरु रविदास जी ने सच ही कहा था कि जब तेरा मन पवित्र है, शुद्ध है तो यही तेरा मन मन्दिर है। इसलिए हरि (भगवान) को पाने की इच्छा के लिए तुझे इधर उधर भटकने की जरूरत नहीं। तेरा मन ही मन्दिर है और तेरा हरि उसमें विराजमान है।

गुरु रविदास जी की आध्यात्मिक शक्ति व भक्ति के सामने सैकड़ों राजा–महाराजा, महारानियां नतमस्तक होकर उनके शिष्य बन गये थे। चित्तौड़ की महारानी झालीबाई और उसकी पुत्रवधु महारानी मीराबाई विशेष रूप से उल्लेखनीय है जिन्होंने ब्राह्मण–पोंगा पंडितों के लाख दबाव की परवाह नहीं करते हुए एक चमार जाति के संत को अपना गुरु धारण किया। गुरु रविदास जी की आध्यात्मिक शक्ति और भक्ति के सामने कांशी के पंडे–ब्राह्मणों को परास्त होकर दण्डवत होना पड़ा और अपने कन्धों पर उनकी पालकी उठाकर पूरे ब्राह्मणों के गढ़ काशी शहर में घुमाना पड़ा। गुरु रविदास जी की भक्ति भावना से तत्कालीन बादशाह सिकन्दर लोधी को भी प्रभावित होना पड़ा।

आचार्य रजनीश (ओशो) का कहना है कि ''गुरु रविदास जी सन्तों के आकाश में ध्रुव तारे हैं जिनकी अलग ही चमक है। भारत की भूमि से ब्राह्मण–पंडितों ने भले ही भगवान बुद्ध और उनके बौद्ध धर्म को छिन्न–भिन्न कर दिया हो, पर वो गुरु रविदास को नहीं मिटा सके। सैकड़ों साल से उनकी रोशनी आज भी कायम है।''

भारत के हर गांव में गुरु रविदास जी के अनुयायी आज भी मौजूद हैं और उनमें से बहुत से अपने को 'रविदासी' कहलाने और अपने नाम के साथ 'रविदासी' जोड़ने में गर्व महसूस करते हैं। उन्होंने उनके नाम का सतसंग व भजन करने के लिए 'रविदास मन्दिर' या 'रविदासी गुरुद्वारा' भी बना रखे हैं, जहां सवेरे–शाम उनकी वाणी गाकर उनकी स्तुति करते हैं। दुनिया के जिस भी देश में रोजी–रोटी व काम धन्धे के लिए 'रविदासी' गये, वहां उन्होंने अपने आराध्यदेव की स्मृति में 'रविदास गुरुद्वारे' स्थापित किये जो उनकी सम्पन्नता, भव्यता व पारस्परिक भ्रातृभाव का परिचायक है। प्रत्येक रविवार को, जब काम–धन्धे से अवकाश मिलता है, वे 'रविदास गुरुद्वारे' (गुरुघर) में इकट्ठे होकर अपने रविदासिया धर्म, अपने रविदासिया कौम तथा अपने परिवारों की प्रगति पर विचार विमर्श करते हैं और सब मिलकर लंगर (भोजन) छकते हैं। गुरु रविदास जी का नाम, उनकी समग्र रविदासी चमार समाज 'जय रविदास'–'जय रविदास' के नारे लगाकर पूरे शहर को गूंजा रहा था। लोग देखकर अचम्भित थे कि कैसे संत रविदास ने वर्ण व्यवस्था को तोड़कर उसके क्रम को उलटा दिया था। समाज का सर्वश्रेष्ठ ब्राह्मण आज अपने कन्धों पर समाज में सबसे नीची चमार जाति के व्यक्ति को ढो रहे थे और उसका जय– जयकार कर रहे थे।

संत गुरु रविदास जी ने उस मध्यम काल में यातायात का समुचित व्यवस्था न होते हुए भी देश–विदेश का दौरा किया। पंजाब में वे गुरु नानक देव जी से मिले और उनके साथ तीन दिन तक ज्ञान–गोष्ठी की। गुरु नानक देव जी ने ही उन्हें सर्वप्रथम 'वाहे गुरु' सम्बोधित कर सम्मान किया और उनके सम्मान में महाभोज (लंगर) का आयोजन किया। कहा जाता है कि तभी से सभी गुरुद्वारों में 'लंगर' की प्रथा शुरू हुई। गुरु रविदास ने अपने संगी–साथियों के साथ जहां–जहां का भ्रमण किया वहां वहां उनकी याद में मंदिर, घाट, तालाब, कुण्ड उनके नाम से आज भी विराजमान हैं। गुरु रविदास जी ने काफी संख्या में पद और साखिया लिखीं, पर रविदासी अशिक्षित दर्शन पर विश्वविद्यालयों में शोध कार्य चलता रहता है और अब तक सैकड़ों विद्वान उन पर 'पी.एच.डी.' व 'एम. फिल' की उपाधि ले चुके हैं। गुरु रविदास जी नाम में ही नहीं, अपने कार्य में भी साक्षात सूर्य (रवि) के समान है जिनकी वाणी का प्रकाश आज भी साधारण से साधारण जन को आलोकित कर रहा है।

गुरु रविदास जी जैसे महान गुरु हैं, वैसे ही उनका चर्मकार समाज पूर्ण लोकतान्त्रिक आत्मनिर्भर समाज है, जिसका बुद्धि बल ब्राह्मण के बुद्धिबल से भी ज्यादा है। इस विषय में लोकोक्ति भी है–

''निगुरा बामन ना भला,
सगुरु भला चमार,
देवतन से कुत्ता भला,
नित उठ भोखे द्वार।।''

गुरु रविदासी जी का रविदासी (चर्मकार) समाज बहुत व्यापक और बहुसंख्यक समाज है। आज देश में रविदासी समाज एकजुट हो जायें तो वह केन्द्र व प्रदेशों में अपनी बहुमत की सरकार बना सकती है। पर इतने महान गुरु की सन्तान होते हुए भी, अपना धर्म, संस्कृति, पहचान अलग रहते हुए भी वह झूठी शान व सम्मान के लिए अलग–अलग धर्मों व सम्प्रदायों में उनके तथाकथित गुरुओं से 'नाम'

सच में बाबा भीम! तुम महान थे

अन्याय और अत्याचार पर बरसने वाले धधकते अंगार थे
इंसानियत का दर्द मानवता और अहिंसा के पुजारी थे
बाबा भीम तुम सच में महान थे।
शूरवीर महावीर, त्याग तपस्या की खान थे
अपनों के हित लड़ने वाले, सच्चे हितैषी,
करुणा के सागर थे
बाबा भीम तुम सच में महान थे।
तालाब के कमल, जंगल के चंदन
और सागर के ज्वार थे
मानवता की आजादी के रखवाले,
दलित, पिछड़े और नारी के उद्धार थे।
बाबा भीम तुम सच में महान थे।
संघर्षों के चिराग युग दृष्टा युग सृष्टा,
दबे कुचलों की आवाज थे।
भीष्म की प्रतिज्ञा, सिकन्दर से योद्धा,
भारत के लिंकन थे।
बाबा भीम तुम सच में महान थे।
धन्य है वह लाल की मां, जो दलितों के मसीहा और
पीड़ित, वंचित के हक की ललकार थे।
बाबा भीम तुम सच में महान थे।
भारत के संविधान कर्ता, कानून के सृजन कर्ता,
जन–जन के कष्टों के हर्ता
विधि के विख्यात ज्ञाता
बाबा भीम तुम सच में महान थे।
आज जन–जन के दिलों में बसी सूरत हो,
आप मानवता की मूरत हो
शोषण के विरुद्ध, कलम के सिपाही
अपनों के हितों के प्रहरी
ज्ञान का प्रतीक, राहों के अन्वेषी,
बाबा भीम तुम सच में महान थे।
बाबा भीम तुम सच में महान थे।

– डा. कांति लाल यादव

वाणी और उनके गुरुघर (गुरुद्वारे) उनको एकजुट रखे हुए है और यही उनकी एकता, भाईचारा, पारस्परिक प्रेम उनकी प्रगति का आधार है। पंजाब के हर गांव में स्थित रविदास मन्दिर, रविदास–गुरुद्वारे, गुरुघर, रविदासी डेरे–रविदासी कौम के सम्पन्नता व भव्यता को दर्शाते हैं जिनके परिवार का कोई न कोई सदस्य विदेश में जाकर भी अपने कारोबार में लीन होते हुए भी अपने परिवार और गांव को नहीं भूलता और अपने गांव में गुरुघर स्थापित करने के लिए तन मन धन से सहयोग करता है, उन गुरु रविदासियों की यह भक्ति भावना बेमिसाल है।

वाराणसी (उ.प.) गुरु रविदास जी की जन्म स्थली और कर्मस्थली है। यहीं पर चमार परिवार में उन्होंने जन्म लिया और अपना पुश्तैनी कार्य करते हुए अपनी आध्यात्मिक शक्ति को शिखर पर पहुंचाया। ब्राह्मणवाद के गढ़ काशी में उन्होंने खुले रूप से पाखंड, पूजा–पाठ, मूर्तिपूजा, तीर्थ, व्रत, पाप–पुण्य, गंगा स्नान आदि का खुलकर विरोध किया और जन्म के आधार पर ब्राह्मणों की श्रेष्ठता को सीधी चुनौती दी। उन्होंने काशी नरेश के सामने शास्त्रार्थ में काशी के पण्डों को हराया और उन्हें दण्डवत होकर अपने पैरों पर झुककर नमस्कार करने को विवश कर उनके ब्राह्मणवाद की श्रेष्ठता को चकनाचूर किया। काशी के पण्डे ब्राह्मण जब उन्हें पालकी में बैठाकर अपने कन्धों पर ढो रहे थे तो समाज अपनी उस धरोहर को संजोकर रख नहीं सका। सिख धर्म के पावन ग्रंथ 'श्री गुरु ग्रन्थ साहिब' में भी गुरु रविदास जी के 40 पद संकलित हैं जिनसे उनकी महानता और विद्वता का पता चलता है। प्रत्येक गुरुद्वारे में सवेरे और शाम को गुरु रविदास जी की आरती गाई जाती है जो प्रत्येक 'रविदासी' के लिए गर्व की बात है।

गुरु रविदास जी के जन्म स्थान काशी में उनकी स्मृति में विशाल भव्य मन्दिर बनाया गया जहां चौबीसों घंटे नियमित जोत जलती है और उनकी वाणी का पाठ चलता है। इसी तरह जालंधर (पंजाब) के बलां में गुरु रविदास जी का दूसरा विशाल धर्मस्थान है जहां प्रत्येक वर्ष 11 जून को सन्त सरवणदास के जन्म दिन पर विशाल संगति होती है जिसमें देश–विदेश के गुरु रविदास जी के श्रद्धालु इकट्ठे होकर उनका स्मरण करते हैं। गुरु रविदास जी का तीसरा बड़ा मन्दिर कात्रज पुणे (महाराष्ट्र) में है जहां लाखों गुरुजी के अनुयायी प्रतिवर्ष दिसम्बर मास में इकट्ठे होकर गुरु जी का गुणगान करते हैं। प्रतिवर्ष माघ पूर्णिमा को गुरु रविदास जी का जन्म दिन देश–विदेश में धूमधाम से मनाया जाता और जुलूस व झांकियां निकाली जाती हैं। रविदास जयंती पर सभा, सम्मेलन, संगोष्ठी आयोजित की जाती हैं और विद्वान लोग उनके कृतित्व व व्यक्तित्व पर अपने–अपने विचार रखते हैं। गुरु रविदास जी के जीवन लेकर अपनी असली पहचान छिपाकर बुजदिली और अपमानजनक जीवन जीते हैं। रविदासी समाज के कुछ लोग राधा स्वामी बन गये हैं, कुछ निरंकारी बन गये है। कुछ 'मजहबी' बन गये हैं। कुछ लोग बापू आशाराम के शिष्य बन गये, कुछ रामपाल महाराज के कुछ लोग डेरा सच्चा सौदा के गुरु गुरमीत राम रहीम के। अब इन तथाकथित स्वयंभू भगवान व गुरुओं की काली करतूतों का भंडाफोड़ हो चुका है। इन अन्धभक्तों और धर्म के नाम लूटे लोगों में अधिक संख्या दलित समाज के लोगों की है जिन्हें ये बलात्कारी बाबा साक्षात् 'भगवान' दिखाई देते थे और उनके एक इशारे पर अपना धन–दौलत तो लुटाते ही थे, उसके लिए मरने–मारने को भी तैयार रहते थे।

अच्छा है, अब देर से सही, अपनी आंखें खोले, अपने मन, बुद्धि से सोचें। अपनी शक्ति को पहचानें और एसे स्वयंभू बलात्कारी बाबाओं की काली करतूतों को जानें, दलित समाज के पास जब भगवान बुद्ध के अलावा संत गुरु रविदास, सद्गुरु कबीर, सतनामी गुरु घासीदास जैसे महान गुरु हैं तो वे अब भटकना छोड़कर एकजुट हों और अपने बाहुबल और संख्या बल के आधार पर देश की सत्ता की चाबी अपने हाथ में लें और सुशासन से शासन चलाये। गुरु गोविन्द सिंह जी ने कहा था–

कोई किसी को राज ना देहि,
जो लेहि निज बल से लेहि।।

पृष्ठ 1 का शेष.....गुरु रविदास जी का बेगमपुरा लोकतांत्रिक राष्ट्र

दुलभ जनमु पुनः फल पाइओ,
बिरथा जात अविवेकै।
राजे इन्द्र समसरि ग्रिह आसन,
बिनु हरि भगति कहहु किह लेखै।।

गुरु रविदास जी ने अपनी सच्ची अटूट, विलक्षण भक्ति से ब्राह्मणों के गढ़ काशी (वाराणसी) में उन पंडों– पुजारियों को परास्त किया जिन्होंने उनकी आध्यात्मिक भक्ति को ललकारा था। गुरु जी से परास्त होकर उन ब्राह्मणों को शर्त के अनुसार गुरु रविदास जी को डोली में बैठाकर अपने कंधों पर उठाकर सारी काशी नगरी में घुमाना पड़ा।

गुरु रविदास जी की भक्ति भाव से प्रभावित होकर कितने ही राजा– महाराजा और महारानियां उनकी शिष्य/शिष्या बन गये। इनमें चित्तौड़ की महारानी झालीबाई और उसकी पुत्र वधु महारानी मीराबाई प्रमुख हैं। गुरुजी ने इस तरह अपनी आत्मशक्ति और सच्ची भगवान भक्ति के आधार पर झोंपड़ियों की पगडंडियों को राजमहलों से जोड़ा। भगवान बुद्ध के बाद यह दूसरी सामाजिक क्रांति थी जिसने मनुस्मृति, ब्राह्मणवाद, वर्ण व्यवस्था को नकार कर मानव समता का मार्ग प्रशस्त किया। उनकी भक्ति में रमी महारानी मीराबाई तो खुले रूप से गाती फिरती थीं–

मीरा ने गाविंद मिल्या जी,
गुरु मिल्या रैदास।।
रैदास संत मिले मोहिं सत्गुरु,
दीन्ही सुरत सहदानी।
मेरो मन लागो गुरु सों,
अब न रहूंगी अटकी।
गुरु मिलिया रैदास जी
दीन्ही ज्ञान की गुटकी।।

इसलिए आचार्य रजनीश अपनी पुस्तक **तुम्हीं पूजा, तुम्हीं धूप** में कहते हैं कि जो व्यक्ति एक महारानी के मन में बसता हो, वह कोई छोटा– मोटा व्यक्ति नहीं, बल्कि एक विलक्षण महान व्यक्ति था, रैदास भारत के आकाश के ध्रुवतारा थे।

गुरु रविदास जी अपनी आध्यात्मिक शक्ति व भक्ति की सुगन्धि विश्व में छोड़ते हुए 151 वर्ष की लम्बी आयु में सवंत 1584 में चित्तौड़गढ़ में ब्रह्मलीन हुए, जहां महारानी मीराबाई के निमंत्रण पर वे वहां गये थे। उनकी स्मृति में वहां स्थापित छतरी उनके चरणों की छाप के साथ विराजमान है।

गुरु जी चहुंमुखी विद्या के धनी थे, उन्होंने अपने लोगों के अंदर स्वाभिमान जगाते हुए कहा –

पराधीनता पाप है
जानु लेहू मेरे मीत।
रविदास दास पराधीन से,
कौन करे है प्रीत।।
पराधीन का दीन क्या,
पराधीन बेदीन।
रविदास दास पराधीन को,
सभी ही समझे हीन।।

गुरु जी ने कहा कि हमें मधुमक्खिओं की तरह मिलकर रहना चाहिए और अपने साथ हो रहे अन्याय व शोषण का विरोध करते हुए अपने मानवीय एकता के अधिकारों की प्राप्ति के लिए संघर्ष करना चाहिए। उन्होंने कहा–

सत संगति मिली रहिये माधव,
जैसे मधुप मखीरा।

उन्होंने शिक्षा पर जोर देते हुए कहा कि शिक्षा के बिना विवेक रूपी दीया मलीन हो जाता है, इसलिए शिक्षित होना जरूरी है–

माधो अबदिया हितकीन
विवेक दीप मलीन।

गुरु रविदास जी ने सच्चे लोकतांत्रिक राज्य की इन शब्दों में अपनी इच्छा की प्रगट की–

ऐसा चाहुं राज मैं,
जहां मिलै सभन को अन्न।
छोट बडे सब सम बसैं,
रविदास रहें प्रसन्न।।

गुरु जी ने 'स्वराज' को सर्वोत्तम बताते हुए कहा–

रविदास मानुष बसन कूं
सुखकर हैं दुई ठांव।
एक है 'स्वराज्य' में,
दूजा मरघट गांव।।

गुरु रविदास जी ने सच्चे समतावादी, मानवतावादी और सम्पन्नता व सुख शान्ति से भरपूर बेगमपुरा राष्ट्र की कल्पना अपनी प्रसिद्ध साखी बेगमपुरा शहर में की थी–

'बेगमपुरा शहर को नाऊ।
दुखु अंदोहु नहीं तिहि ठाऊ।।
ना तसवीस खिराजु न मालु।
खउफु न खता न तरसु जमालु।।

इस बेगमपुरा शहर में न दुःख है, न चिंता, न कोई गम। यहां किसी को कोई डर–भय नहीं, क्योंकि यहां कोई किसी के आधीन नही। यहां सदैव सुख और कल्याण है। यहां न तो किसी प्रकार का माल खरीदना पड़ता और न ही कोई टैक्स देना पड़ता है, यहां न कोई घाटा हो जाने का डर है। श्ह सुन्दर शहर एक बादशाहत के आधीन सदैव आबाद रहता है और जलवायु के लिहाज से सर्वोत्तम है, यहां कहीं भी आने–जाने की कोई रूकावट नहीं है जो जहां चाहे सैर करता फिरता है। सब लोग यहां रोटी, कपड़ा, मकान की समस्या से दूर भाईचारा व बराबरी के लिहाज से समान स्तर पर आनन्द के साथ रहते हैं।

गुरु रविदास जी के बेगमपुरा राष्ट्र की कल्पना को बाबा साहब डा. अम्बेडकर ने भारतीय संविधान में समाजवादी, समतावादी–समता, स्वतंत्रता, भाईचारा पर आधारित सबको शिक्षा, चिकित्सा, सुरक्षा, न्याय, धर्म व आस्था में स्वतंत्र अभिव्यक्ति के अधिकार देकर पूरा किया है।

भारतीय संविधान गुरु रविदास जी के सपनों का दस्तावेज है जो देश के प्रत्येक नागरिक को समानता के अधिकार प्रदान करता है। गुरु जी की इस बेगमपुरा साखी के साथ उनके 40 पद महान पवित्र ग्रंथ श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दिये गये हैं जो उनकी महानता और महत्ता को दर्शाती है।

ऐसे महान बेगमपुरा राष्ट्र की कल्पना करने वाले, सर्वप्रथम 'स्वराज्य' की प्रेरणा देने वाले और अपनी आध्यात्मिक भक्ति की शक्ति से मन में ही सच्चे परमात्मा का मन्दिर स्थापित करने वाले गुरुओं के भी गुरु श्री रविदास महाराज की जयन्ती पर हार्दिक बधाई। •

मनुवादी आतंकवाद के जाल में फंसा नक्सली आन्दोलन

• एस.के.डी. अम्बेडकर

नक्सली आंदोलन की शुरुआत सिल्लीगुड़ी के नक्सलवाड़ी से हुई थी। मार्क्सवाद पर आधारित इसका विचारधारा यह है कि गरीबों को अपना हक (अधिकार) खूनी क्रांति के द्वारा जमींदारों तथा पूंजीपतियों से लेना चाहिए जिससे गरीबी के जीवन में सुधार हो सके। वर्तमान में जो नक्सलियों/माओवादियों का आन्दोलन चल रहा है, क्या वह आंदोलन उपरोक्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए हो रहे हैं? दूसरा प्रश्न यह है कि क्या नक्सलियों/माओवादियों की लड़ाई जमींदारों तथा पूंजीपतियों के खिलाफ हो रही है?

जब इन प्रश्नों के उत्तर खोजने के लिए पड़ताल करते हैं तो पता चलता है कि वर्तमान में इन नक्सलियों/माओवादियों की लड़ाई पूंजीपतियों तथा जमींदारों से नहीं है क्योंकि इनका निशाना ये लोग नहीं बन रहे हैं। इनका निशाना पुलिस फोर्स, स्कूल भवन बन रहे हैं। सड़क, पुल–पुलिया, सरकारी भवन, रेलगाड़ी, बस–ट्रक आदि बन रहे हैं।

जब हम लोगा और पड़ताल में जाते हैं तो ये जानकारी हासिल होती है कि नक्सली तथा माओवादियों के आंदोलन में वे लोग शामिल हैं जो बहुजन समाज यानि 85 प्रतिशत के गरीब लोग हैं जिनके पास न तो भोजन की व्यवस्था है, न तन ढकने के लिए कपड़ा है, न मकान है, न जमीन है, न शिक्षा है। ये अनपढ़ लोग ही नक्सली आंदोलन चला रहे हैं। लेकिन इनके जो बड़े नेता हैं वह एक भी इस गरीब, अनपढ़, बहुजन का नहीं है, बल्कि सवर्ण समाज का ही है जो पढ़ा–लिखा और नेतृत्व प्रदान करने वाला है। यही इन नक्सलियों के नेता इनके लिए लक्ष्य निर्धारित करते हैं और हमला गरीब नक्सलियों द्वारा करवाते हैं। बम–बारूद का प्रबंध भी इनके नेता ही करते हैं।

ये इनके सवर्ण नेता घोर मनुवादी ब्राह्मणवादी है जो सूचना–तंत्र से लैश है। ये गरीबी मिटाने की बात तो करते हैं लेकिन ये लोग ही नक्सलियों के आंदोलन द्वारा अपनी जमींदारी/ पूंजी तथा ब्राह्मणवाद/मनुवाद को बचाने में लगे हुए हैं, क्योंकि इन्हीं लोगों ने मनुस्मृति जैसा कानून बना कर इस बहुजन समाज को जानवरों से भी बदतर जिन्दगी जीने पर मजबूर किया था। आज भी इस दिशा में इन लोगों का प्रयास जारी है, क्योंकि कुछ पार्टियों को छोड़कर सभी पार्टियों पर इन मनुवादियों का कब्जा है। ये लोग मंच पर तो एक दूसरे के खिलाफ भाषण तो करते हैं लेकिन समय आने पर एक छत के नीचे तुरंत आ जाते हैं। इन लोगों ने देखा कि गरीब लोग पूंजीपतियों/जमींदारों के खिलाफ ताकत बना रहे हैं तब इन लोगों ने नक्सलियों के बीच घुसकर अपना नेतृत्व देकर जमींदारों/पूंजीपतियों पर हमले करने के बजाय पुलिस, स्कूल, रेलगाड़ी आदि सरकारी संस्थानों की ओर इनके हमले का रुख मोड़ दिया जिसके परिणामस्वरूप नक्सलियों को सरकारी/गैर सरकारी मनुवादी मिलकर इन नक्सलियों के साथ–साथ इनके परिवारों तक पर हमला करके इन्हें हजारों साल पहले वाली स्थिति में भेज रहे हैं।

इनके आन्दोलन की शुरुआत अच्छी थी लेकिन वर्तमान में इनका आन्दोलन पूरी तरह से मनुवादी/ब्राह्मणवादी आतंकवाद के जाल में फंस चुका है जिसमें से इस गरीब बहुजनों को निकलना जरूरी है। बाबा साहब डा. अम्बेडकर के वजह से कुछ बहुजन समाज के गरीब किसी प्रकार मेहनत करके छोटा–मोटा मकान, जमीन तथा दुकान बना लिये हैं और सुख–शांति से जी रहे हैं। ये मनुवादी/ब्राह्मणवादी नक्सली नेतागण इन गरीब बहुजनों पर भी हमले करता रहा है। अगर नक्सलियों का आंदोलन भारतीय लोकतंत्र व्यवस्था को खत्म कर माओवाद पर आधारित शासन व्यवस्था स्थापित करना इनका उद्देश्य है तथा भारतीय संविधान को बदलना ही इनका उद्देश्य है तो इसके आंदोलन का परिणाम मूल निवासी बहुजनों के लिए घातक होगा। क्योंकि जिस तरह वामपंथी शासन की बागडोर मनुवादी/ब्राह्मणवादी सवर्णों के हाथ में है जहां उनकी सरकारें हैं वहां गरीबों का भला नहीं हुआ है। उसी तरह नक्सलियों का अगर भारत में सरकार बनती है तो इनके नेतृत्वकर्ता सवर्ण ही होंगे जो केवल सवर्ण समाज के लिए ही कार्य करेंगे तथा उसका पूरा लाभ सवर्णों को ही मिलेगा।

दरअसल बाबा साहब डा. अम्बेडकर ने मजदूरों के लिए 1942 में 'लेबर लॉ' बनाया था। अनुसूचित जाति/जनजातियों को संविधान में आरक्षण देकर उन्हें आगे बढ़ने का अधिकार दिया, पिछड़े वर्ग के लिए भी उन्होंने धारा 340 बना दिया था जिसका लाभ आरक्षण के रूप में उन्हें मिल रहा है। अल्पसंख्यकों के लिए संविधान में व्यवस्था दी जिसका लाभ उन्हें मिल रहा है। साथ ही समता, स्वतंत्रता, न्याय और बंधुत्व पर आधारित विश्व का सर्वश्रेष्ठ संविधान दिया जिसके कारण भारत विकासशील देश से विकसित राष्ट्र बनने की ओर अग्रसर है। वर्तमान में गरीब तथा मूलनिवासी बहुजन समाज के लोग बहुत तेजी से विकास कर रहे हैं। इस विकास को रोकने तथा बाबा साहब अम्बेडकर की विचारधारा की तरफ ये लोग ना जाएं तथा उनके बताये रास्ते 'शिक्षित करो! संघर्ष करो! संगठित करो!' पर न चला जाएं से रोकने के लिए ही मनुवादियों ने तरह–तरह के हथकंडे अपना रहा है।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि इतने बड़े–बड़े घटना को अंजाम देना गरीब–अनपढ़ इन मूलनिवासी बहुजन समाज से बना नक्सलियों के बूते की बात नहीं है। इनका नाम लेकर हिन्दू आतंकवादी (या मनुवादी आतंकवादी) घटना को अंजाम दे रहे हैं। (भूतपूर्व गृह मंत्री पी. चितंबरम ने भी हिन्दू आतंकवाद पर चिंता जतायी है) इनका समर्थन लेकर बड़ी चालाकी से इन्हें बदनाम करके इनके समाज पर सरकारी/गैर सरकारी हमले करवाकर उनका सफाया करके इन्हें हजारों साल पहले वाली स्थिति में पहुंचाना ही इनका उद्देश्य है। साथ ही जमींदारों तथा पूंजीपतियों की जमीन तथा पूंजी बचाना ही इसका उद्देश्य है।

अतः हम लोग दावे के साथ कह सकते हैं कि इन गरीब, अनपढ़ नक्सलियों का आंदोलन इनका अपना आंदोलन नहीं है क्योंकि इनके आंदोलन का फायदा जमींदारों तथा पूंजीपतियों को हो रहा है। इनका अपना खुद का नुकसान हो रहा है, इसलिए इनका आंदोलन मनुवादियों/ब्राह्मणवादियों के जमींदारों तथा पूंजीपतियों के हाथ में चला गया है। इसलिए हम निष्कर्ष यही निकाल सकते हैं कि इनका आंदोलन हिन्दू आतंकवाद के जाल मं फंस चुका है।•

हिमायती
4 / फरवरी (प्रथम)), 2019 (कुल पृष्ठ 4)
पोस्टल डिस्पेच तिथि : 16-17 फरवरी, 2019

आर. एन. आई. नं. 40611/62
रजि. G-3/DL(N)/090/2018-2020
प्रकाशन तिथि : 14 फरवरी, 2019

सम्पादकीय का शेष....2019 लोकसभा चुनाव - सत्ता का ऊंट किस करवट बैठेगा?

साथ सारी दुनिया के लोग कर चुके थे जो अचम्भित थे कि कल तक गरीब चाय वाले के नाम पर वोट मांगने वाला चुनाव जीत कर प्रधानमंत्री बनने के बाद अपना पुरातन ही भूल गया। क्या फिर वह उसका वोट मांगने का एक ढकोसला था?

श्री नरेन्द्र मोदी जी ने प्रधानमंत्री बनने के बाद संसद भवन में प्रवेश करने से पहले उसके मुख्य द्वार पर नतमस्तक होकर उसे चूमा और बाबा साहब डा. अम्बेडकर जी द्वारा निर्मित भारतीय संविधान को भी चूमकर उसके प्रति कृतज्ञता प्रगट की जिसकी बदौलत देश की 125 करोड़ जनता का वह प्रधानमंत्री बने। भारत की जनता उनके इस नतमस्तक के व्यवहार से अभिभूत हो गई कि अब उनके अच्छे दिन आने वाले हैं। पर गत वर्ष के उनके पांच साल के कार्यकाल में क्या जनसाधारण लोगों के अच्छे दिन आ गये?

हमने भी उस समय 'हिमायती' के विशेषांक में देश के आम चुनावों में भाजपा को वोट देकर नरेन्द्र मोदी की सरकार बनवाने की अपील करते हुए दलित व शोषित समाज के लोगों के अन्दर भाजपा की साम्प्रदायिकता और वायदा किया था कि उनकी भाजपा सरकार बनने के बाद हर साल 2 करोड़ नौजवानों को रोजगार देंगे, वह भी आज तक पूरा नहीं हुआ। उल्टे देश के बेरोजगार नवयुवकों को यह कहकर कि वे 'सड़कों पर पकोड़े बेचें', उनकी शिक्षा का मजाक उड़ाते हुए उनके बेरोजगारी के घावों को और हरा कर दिया। नरेन्द्र मोदी ने जो यह वायदा किया था कि उनका सरकार बन जाने के बाद वे देश के प्रत्येक नागरिक के बैंक खाते में 15–15 लाख रुपये जमा करायेंगे, जो आज तक पूरा नहीं किया गया, उल्टे बैंकों के कड़े नियमों के कारण उन्हें अपना बैंक खाता चलाये रखना मुश्किल हो गया है। उन्होंने वायदा किया था कि उनकी सरकार बन जाने के बाद देश से भ्रष्टाचार मिटा देंगे और भ्रष्टाचारियों को जेल में डाल देंगे। नरेन्द्र मोदी जी के प्रधानमंत्री बने 5 साल होने लगे हैं इस दौरान न तो देश में भ्रष्टाचार खत्म हुआ है और न ही किसी भ्रष्टाचारी को सजा दिलाकर जेल भेजने में वे कामयाब हुए हैं, उल्टे देश में भ्रष्टाचार बढ़ा है, लूट–खसोट, चोरी–डकैती, महिलाओं व बच्चियों के साथ बलात्कार, बाहर कर दिया। इनके बदले में नये 500 रुपये व 2000 रु. के नोटों के लेने के लिए देश के लोगों को बैंकों के बाहर लाईनों में खड़ा कर दिया, इस नोटबन्दी से न तो 'कालाधन' वापिस आया और न ही देश को कोई फायदा हुआ; क्योंकि जितनी राशि बैंक के बाहर चलन में थी, वह नये नोटों के बदले बैंकों में वापिस आ गई। इस नोटबन्दी से बैंकों का काम काज तो ठप्प हुआ, छोटे मोटे कल–कारखाने, फैक्टरियों, दुकानों पर भी प्रभाव पड़ा, भवन निर्माण कार्यों को भी 'नोटबन्दी' के कारण खुली मुद्रा न मिल पाने के कारण बन्द करना पड़ा, इससे कारोबार के ठप्प हो जाने से उनमें काम करने वाले मजदूर, छोटे ठेकेदार, राज मिस्री आदि बेरोजगार हो गये, नई करेंसी की कमी के कारण बाजारों का कारोबार बन्द हो गया। नरेन्द्र मोदी जी का इस 'नोटबन्दी' से कालाधन वापिस लाने का विचार ख्याली पुलाव साबित हुआ। इससे पूरा देश महंगाई, मन्दी, खाद्य पदार्थों की कमी की चपेट में आ गया।

'नोटबन्दी' के तुगलकी फरमान के बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देश भी प्रभावित हुए, उत्पादक भी और विक्रेता भी। इसी बीच पेट्रोल, डीजल, रसोई गैस की कीमतें भी हर रोज बढ़ने से भी लोगों के रोजगार व कारोबार पर भी प्रभाव पड़ा। आम लोगों की मांग थी कि अन्य उपभोक्ता वस्तुओं की तरह पेट्रोल, डीजल, रसोई गैस आदि को भी 'जी. एस.टी.' के अन्तर्गत लाया जाये, क्योंकि इससे लोगों का जन जीवन और जीवन यापन प्रभावित हो रहा है और इससे माल ढुलाई की दर बढ़ने से हर चीज महंगी हो गई है, पर मोदी सरकार ने अपनी हठधर्मी के कारण अभी तक इस ओर ध्यान नहीं दिया है। वह सोचती है कि उसकी सत्ता के अश्वमेध के घोड़े को रोकने वाला कोई नहीं है और वह जो भी कर रही है, सही कर रही है। उसके इस घमंड को अभी कुछ दिन पूर्व हुए पांच राज्यों के चुनाव परिणामों ने चकनाचूर कर दिया जहां मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान जैसे प्रदेश भाजपा सरकार से खिसकर उस कांग्रेस की झोली में आ पड़े जिसे भाजपा मृतप्राय समझे बैठी थी। इस एक झटके ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और भाजपा के अध्यक्ष अमित शाह की नींद उड़ा दी।

अब 2019 की लोकसभा के चुनाव सिर पर हैं, देश में भाजपा व मोदी विरोधी लहर बह रही है। इसमें राममन्दिर निर्माण का मसला सुप्रीम कोर्ट में होने के कारण वह मुद्दा भी चुनाव जिताने में कामयाबी दिलाता नजर नहीं आ रहा। ऐसी स्थिति में अब नरेन्द्र मोदी सरकार अपनी सरकार का आन्तरिक बजट लेकर आई है जिसके पिटारे से उन्होंने कुछ राहत व सहूलियतें देकर देश के किसानों, मजदूरों, दलितों, अल्पसंख्यकों, बेघर वालों, बेरोजगारों को रिझाने की कोशिश की है। अब मोदी सरकार का यह अंतरिम बजट उन्हें दुबारा चुनाव जिता पायेगा, यह सब अब नोटबन्दी, जी. एस.टी. से प्रभावित लोगों और पिछले चुनावों में जनता से किये वायदों को पूरा नहीं करने पर निराश हुए लोगों पर निर्भर करेगा कि वे सत्ता पर दुबारा मौका दे या चलता करें, क्योंकि उसके अच्छे दिन तो मोदी सरकार के कार्यकाल में आये ही नहीं, उससे तो पहले की कांग्रेसी सरकार थी जिसमें उन्हें अमन–चैन के साथ आराम से रोजी, रोटी मिल रही थी और वे चैन की नींद सो रहे थे।

– डा. सोहनपाल सुमनाक्षर

नरेन्द्र मोदी का संघ के प्रति प्रेम भावना के प्रति नफरत को दूर करने के लिए लिखा था कि न तो भाजपा बाघ है और न ही नरेन्द्र मोदी कोबरा–काला नाग। उनकी भावना समाज में समता लाने का भाव है। अतः सभी ने उनकी खुलकर तन मन धन से मदद करो। देश के दलित, शोषित, उत्पीड़ित ने खुलकर भाजपा की मदद की और उसे भारी बहुमत से जिताया, जिससे नरेन्द्र मोदी–चाय वाला–देश का प्रधनमंत्री बना। पर नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में बनी भाजपा की सरकार क्या लोगों की आशा और आकांक्षाओं पर खरी उतरी है? इस पर उसके गत 5 वर्षों के रिपोर्ट कार्ड पर विवेचन करना जरूरी है।

लोकसभा के 2014 में हुए आम चुनाव में नरेन्द्र मोदी ने जो विदेशों से काला धन वापिस लाने का वायदा किया था वह अभी तक पूरा नहीं हुआ। उल्टे उनकी सरकार के आने के बाद विजय माल्या, नीरव मोदी और मेहुल चौकसी देश का लाखों करोड़ रु. लेकर विदेश भाग गये जो अभी तक वापिस नहीं लाये जा सके हैं। लगता है कि उनके विदेश भाग जाने के पीछे मोदी सरकार की नाकामयाबी नजर आती है। उन्होंने सरेआम बेकसूरों की हत्या की घटनायें चरम सीमा पर हैं, उनका शासन–प्रशासन इस मामले में फेल और असहाय नजर आ रहा है। देश में आतंकवाद तेजी से बढ़ रहा है। देश का अधिकांश भाग जात–पांत, धर्म, भाषा, क्षेत्रवाद की आग में झुलस रहा है। गोरक्षा के नाम पर दलित व मुस्लमानों को मौत के घाट उतारा जा रहा है। लगता है कि नरेन्द्र मोदी की सरकार का ध्यान अपने वायदों को पूरा करने की जगह गाय, गंगा व राम मन्दिर के पीछे पड़ा है।

श्री नरेन्द्र मोदी ने प्रधानमंत्री बनते ही समझ लिया कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) भी वह स्वयं है, 'एन.डी.ए.' गठबन्धन में शामिल छोटी–बड़ी सभी 42 पार्टियां भी वह स्वयं है यानी भारत सरकार का मुखिया होने के कारण वह सर्वेसर्वा हैं। इस गुमान में उन्होंने 'राष्ट्रहित' का नाम देकर जो भी कार्य किए उस विषय में उन्होंने न अपनी पार्टी, न 'एन.डी.ए.' के घटक दल और न ही अपने मंत्रीमण्डल के सदस्यों से कभी विचार विमर्श किया, और एक ही झटके में 12 सितम्बर, 2014 में 'नोटबन्दी' की घोषणा कर दी और इस तरह से चालू 500 रुपये वे 1000 रुपये के नोटों को चलन से के कारोबार में 'जी.एस.टी. यानि 'गुडस एंड सर्विस टैक्स' लागू कर दिया। विभिन्न वस्तुओं पर विभिन्न टैक्स का स्लेब बनाकर 18 फीसदी से 28 फीसदी तक का टैक्स लगा दिया और सभी–व्यापारियों व दुकानदारों को 'जी.एस.टी.' का नया नम्बर लेने की भी घोषणा कर दी। इससे 'नोटबन्दी' की मार से जो कारोबारी कुछ उभरने लगे थे, 'जी.एस.टी.' लागू होने से उसके कारोबार फिर ठप्प पड़ गये। व्यापारियों और कारोबारियों में इससे व्यापक रोष और हताशा खुलकर सामने आई। लोगों ने अपनी दुकानों, कलकारखानों पर इसके विरोध में ताले लगा दिये। जहां पूरा कारोबार ठप्प हो गया, वहां जो मजदूर काम में लगे थे, एक बार वे फिर से बेरोजगार हो गये और उनके घरों में दो जून का खाना मिलना भी बन्द हो गया। मोदी सरकार को 'जी.एस.टी.' के लागू होने से हो रहे नुकसान को पूरा करने के बाद अपने टैक्स के स्लेब सिस्टम को अनेक बार बदलना पड़ा। पर 'जी.एस.टी.' से दुकानदारों व व्यापारियों को जो नुकसान हो चुका था, उसकी भरपाई होने की जगह बार–बार 'रूल' बदलने से उन्हें अनेक कठिनाइयों का समाना करना पड़ा। इससे उपभोक्ता

अधिकार कहां है

सत्ता चला रहे कौन ये
अधिकार कहां है?
बातों की सिर्फ जंग है,
हथियार कहां है?
डोरी किसी हाथ है,
पतंगें किसी के हाथ।
जो पेच लड़ाता है,
वो किरदार कहां है?
राहों में कैसे लुट गया,
अमन का कारवां।
रहजन की ये साजिश है
तो सरदार कहां है?
फांसी की सजा कल उसे,
मुन्सिफ ने सुना दी।
मुखबिर से पूछता है,
गुनहागार कहां है?
संसद में अब भी जारी है,
कब्जा दलाल का।
दबंगों का सिर्फ शोर है,
सरकार कहां है?
गुलामों की भीड़ से,
भरा आजाद वतन है।
बेकार नौजवां है,
रोजगार कहां है?

– मुसाफिर देहलवी

असहिष्णुता

भारतीय संस्कृति का
उत्स है
असहिष्णुता
शम्बूक का वध
एकलव्य का अंगछेदन
परशुराम द्वारा
क्षत्रियों का इक्कीस बार
विनाश
महिषासुर का मर्दन
स्त्री–शूद्र का
विद्या निषेध
अतीत से वर्तमान तक
फैली असहिष्णुता
रोहित बेमुला
एम.एम. कालबुर्गी
कामरेड गोविन्द पानसरे
अखलाख और पादरी स्टीफेंस
की हत्या में बदल गई है
अब सच को सच
कहना
डराने लगा है।
सावधान!
सांस्कृतिक आतंकवाद
शिविरों में
शस्त्र संचालन का
प्रशिक्षण ले रहा है।

– डा. एन. सिंह

स्वामी, सम्पादक/ प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर द्वारा वन्दना आफसेट प्रिन्टर्स, A–9 सराय पीपलथला एक्सटेंशन, दिल्ली–33 में मुद्रित तथा रजि. कार्यालय : 233 टैगोर पार्क, माडल टाउन, दिल्ली–9 से प्रकाशित। ❑ सह सम्पादक – श्रीमती त्रिलोचन सुमनाक्षर ❑ व्यवस्थापक : जय सुमनाक्षर, फोन : 27421449, मो. 9810278936 **Email-sumanakshar@ymail.com**
नोट : हिमायती में प्रकाशित रचनाओं के लिए सम्पादक की सहमति जरूरी नहीं। हिमायती से सम्बन्धित किसी भी कानूनी कार्रवाई का क्षेत्र दिल्ली न्यायालय तक ही सीमित है।
सम्पादकीय कार्यालय : बी 3/9, दूसरी मंजिल, माडल टाउन–1, दिल्ली–110009